डॉ॰ ज्योति भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग,
एस॰ आर॰ ए॰ पी॰ कॉलेज,
बारा चकिया।

B.A. Part - 1
Non-Hindi

Date :- 15-02-2023

"तुम गा दो मेरा गान"

तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए!

मेरे वर्ण-वर्ण विश्रृंखल,
चरण-चरण भरमाए,
गूँज-गूँज कर मिटने वाले
मैंने गीत बनाये;

कूक हो गई हूक गगन की
कोकिल के कंठों पर,

तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए!

जब-जब जग ने कर फैलाए,
मैंने कोष लुटाया,
रंक हुआ मैं निज निधि खोकर
जगती ने क्या पाया!

भेंट न जिसमें मैं कुछ खोऊँ,
पर तुम सब कुछ पाओ,

तुम ले लो, मेरा दान अमर हो जाए!
तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए!

सुंदर और असुंदर जग में
मैंने क्या न सराहा,
इतनी ममतामय दुनिया में
मैं केवल अनचाहा;

देखूँ अब किसकी रुकती है
आ मुझ पर अभिलाषा,
तुम रख लो, मेरा गान अमर हो जाए!
तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए।

दुख से जीवन बीता फिर भी
शेष अभी कुछ रहता,
जीवन की अंतिम घड़ियों में
भी तुमसे यह कहता

सुख की साँस पर होता
है अमरत्व निछावर,

तुम छू दो, मेरा प्राण अमर हो जाए!
तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए!

शब्दार्थ :—

- विशृंखल – बन्धनहीन, स्वतंत्र, मुक्त
- कूक – लम्बी गहरी आवाज़, कोकिला की आवाज
- हूक – दर्द की आवाज, पीड़ा
- कोष – निधि, खजाना
- सराहा – प्रशंसा करना

Ajanta
Page No.
Date

संदर्भ-प्रसंग :-

प्रस्तुत कविता 'तुम गा दो मेरा गान' कविता कविवर हरिवंश राय 'बच्चन' की काव्य-कृति 'सतरंगिनी' में संकलित है। समाज के प्रति मनुष्य का दायित्व एवं विश्व के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण इस कविता का विषय है। आज विश्व में हर जगह दुख: दर्द का ही प्रभाव है। कवि हर्ष, उल्लास, प्रेम का भावना चाहते है। दुनिया के लोगों से कवि कहते हैं कि उनका जीवन दुःख में ही बीता है। आज जीवन के अंतिम दिनों में कवि पाठकों से उनका गाना गाकर अमर करने को कहते है।

व्याख्या :-

कवि 'बच्चन' जी कहते हैं कि पाठकों! तुम मेरा गीत गा दो, वह गीत अमर हो जायेगा। मैंने अपने ये गीत वर्ण, चरण आदि को सजा-कर बनाये हैं। मेरे ये गीत गुंज-गुंजकर मिटनेवाले गीत हैं। कोयल की मीठी तान मानो गगन तक पहुँचा गई है। तुम गा दो मेरा गान तो अमर बन जाएगा।

कवि अपने आप को सदा लुटाता रहा है, जब संसार ने कभी भी किसी चीज की याचना की है, तब-तब वह अपने हृदय का कोष लुटाता रहा है। वह अपना सब कुछ लुटाकर रंक बन गया है। वह अपने दान को अमरत्व प्राप्त कराने का

आकांक्षी है।

कवि संसार की सुंदरता और कुरूपता दोनों की सराहना की है। यह संसार ममतामय है, वही केवल अनचाहा है। उसे आशा लगी रहती है कि कौन उसे अपनाता है।

कवि का जीवन दुःखमय व्यतीत हुआ है, जीवन के अंत-अंत तक अगर उसे सुख की एक साँस की उपलब्धि हो जाती है, तो वह अपने जीवन को सार्थक समझेगा. और अपना अमरत्व उस पर निछावर कर देगा।

विशेष :-

प्रस्तुत कविता में 'बच्चन' जी ने मधुर स्वप्न और मादक कल्पनाओं के साथ-साथ मोहक शब्दावली का प्रयोग किया है। समाज के प्रति मनुष्य की जिम्मेदारी, संसार के प्रति उदारता का दृष्टिकोण तथा पाठकों के प्रति कृतज्ञता का भाव इस कविता का मूलाधार है। भाषा सरल, सहज और प्रवाह युक्त है।